Kanoria
PG Mahila
Mahavidyalaya
Jaipur

9. National Seminar on Brijbhasha Sahitya me Kala Avam Sanskriti: Vartmaan Pripekhshya

Date: 20-12-2017 to 21-12-2017

1. Brochure:

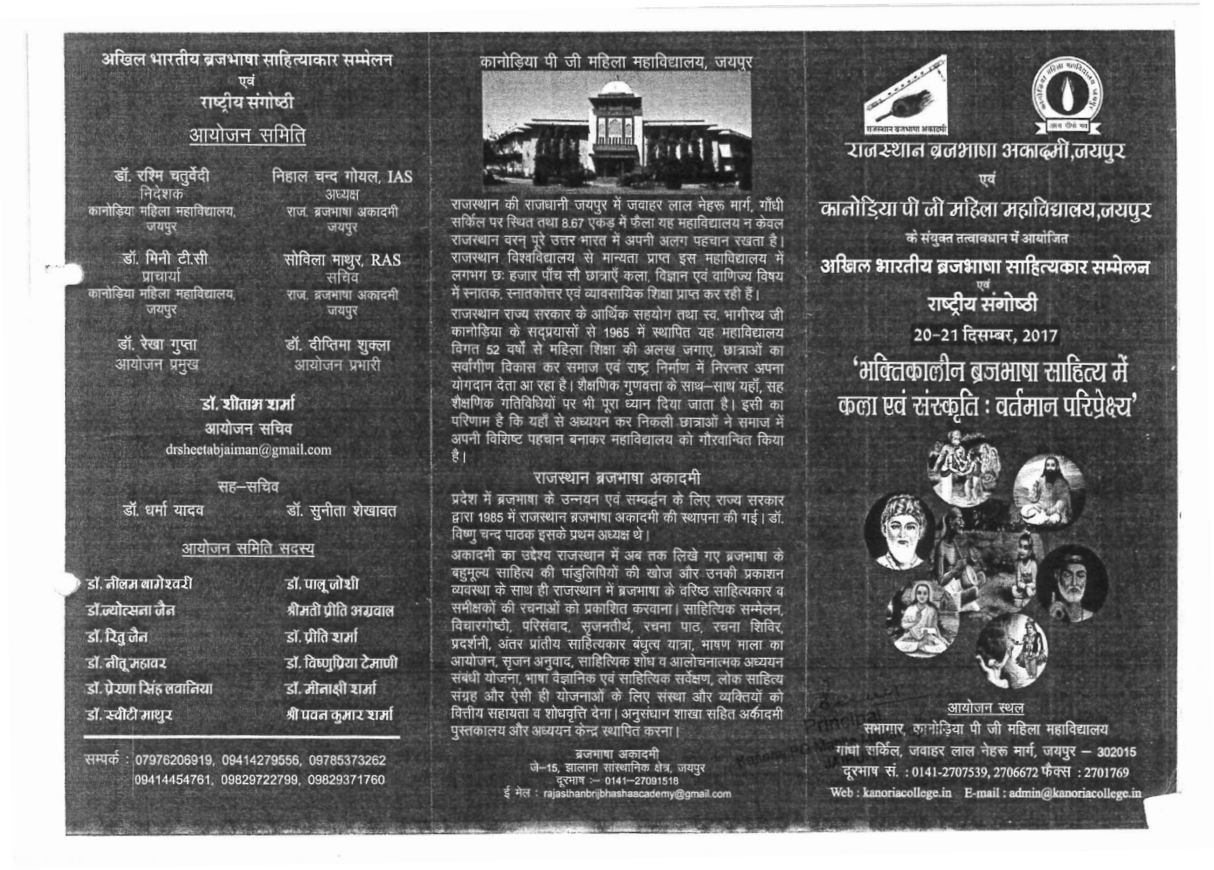

अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्याकार सम्मेलन
एवं
राष्ट्रीय संगोष्ठी
आयोजन समिति

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी
निदेशक
कानोड़िया महिला महाविद्यालय, जयपुर

निहाल चन्द गोयल, IAS
अध्यक्ष
राज. ब्रजभाषा अकादमी जयपुर

डॉ. मिनी टी.सी
प्राचार्या
कानोड़िया महिला महाविद्यालय, जयपुर

सोविला माथुर, RAS
सचिव
राज. ब्रजभाषा अकादमी जयपुर

डॉ. रेखा गुप्ता
आयोजन प्रमुख

डॉ. दीप्तिमा शुक्ला
आयोजन प्रभारी

डॉ. शीताभ शर्मा
आयोजन सचिव
drsheetabjaiman@gmail.com

सह–सचिव
डॉ. धर्मा यादव
डॉ. सुनीता शेखावत

आयोजन समिति सदस्य

डॉ. नीलम वागेश्वरी
डॉ.ज्योत्सना जैन
डॉ. रितु जैन
डॉ. नीतू महावर
डॉ. प्रेरणा सिंह लवानिया
डॉ. स्वीटी माथुर
डॉ. पालू जोशी
श्रीमती प्रीति अग्रवाल
डॉ. प्रीति शर्मा
डॉ. विष्णुप्रिया टेमाणी
डॉ. मीनाक्षी शर्मा
श्री पवन कुमार शर्मा

सम्पर्क : 07976206919, 09414279556, 09785373262
09414454761, 09829722799, 09829371760

कानोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय, जयपुर

राजस्थान की राजधानी जयपुर में जवाहर लाल नेहरू मार्ग, गाँधी सर्किल पर स्थित तथा 8.67 एकड़ में फैला यह महाविद्यालय न केवल राजस्थान वरन् पूरे उत्तर भारत में अपनी अलग पहचान रखता है। राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त इस महाविद्यालय में लगभग छः हजार पाँच सौ छात्राएँ कला, विज्ञान एवं वाणिज्य विषय में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

राजस्थान राज्य सरकार के आर्थिक सहयोग तथा स्व. भागीरथ जी कानोड़िया के सद्प्रयासों से 1965 में स्थापित यह महाविद्यालय विगत 52 वर्षों से महिला शिक्षा की अलख जगाए, छात्राओं का सर्वांगीण विकास कर समाज एवं राष्ट्र निर्माण में निरन्तर अपना योगदान देता आ रहा है। शैक्षणिक गुणवत्ता के साथ–साथ यहाँ, सह शैक्षणिक गतिविधियों पर भी पूरा ध्यान दिया जाता है। इसी का परिणाम है कि यहाँ से अध्ययन कर निकली छात्राओं ने समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाकर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है।

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

प्रदेश में ब्रजभाषा के उन्नयन एवं सम्वर्द्धन के लिए राज्य सरकार द्वारा 1985 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की स्थापना की गई। डॉ. विष्णु चन्द पाठक इसके प्रथम अध्यक्ष थे।

अकादमी का उद्देश्य राजस्थान में अब तक लिखे गए ब्रजभाषा के बहुमूल्य साहित्य की पांडुलिपियों की खोज और उनकी प्रकाशन व्यवस्था के साथ ही राजस्थान में ब्रजभाषा के वरिष्ठ साहित्यकार व समीक्षकों की रचनाओं को प्रकाशित करवाना। साहित्यिक सम्मेलन, विचारगोष्ठी, परिसंवाद, सृजनतीर्थ, रचना पाठ, रचना शिविर, प्रदर्शनी, अंतर प्रांतीय साहित्यकार बंधुत्व यात्रा, भाषण माला का आयोजन, सृजन अनुवाद, साहित्यिक शोध व आलोचनात्मक अध्ययन संबंधी योजना, भाषा वैज्ञानिक एवं साहित्यिक सर्वेक्षण, लोक साहित्य संग्रह और ऐसी ही योजनाओं के लिए संस्था और व्यक्तियों को वित्तीय सहायता व शोधवृत्ति देना। अनुसंधान शाखा सहित अकादमी पुस्तकालय और अध्ययन केन्द्र स्थापित करना।

ब्रजभाषा अकादमी
जे–15, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र, जयपुर
दूरभाष :– 0141–27091518
ई मेल : rajasthanbrijbhashaacademy@gmail.com

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर
एवं
कानोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय, जयपुर
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन
एवं
राष्ट्रीय संगोष्ठी
20–21 दिसम्बर, 2017
'भक्तिकालीन ब्रजभाषा साहित्य में कला एवं संस्कृति : वर्तमान परिप्रेक्ष्य'

आयोजन स्थल
सभागार, कानोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय
गांधी सर्किल, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर – 302015
दूरभाष सं. : 0141-2707539, 2706672 फैक्स : 2701769
Web : kanoriacollege.in E-mail : admin@kanoriacollege.in

2. List of resource person/guests:

1. Prof. Vidhotma Miksha, Banaras Hindu University
2. Dr. Rajni Kulshreshtha, Udaipur
3. Prof. Mukesh Garg, Delhi University
4. Dr. Jaya Pridarshini Shukla, Aligarh Muslim University
5. Dr. Tribhuvan Nath Shukl, Durgavati University, Jabalpur
6. Dr. Annapurna Shukla, Banasthali Vidhyapeeth
7. Prof. Krishan Chand Goswami, Braj University, Bharatpur
8. Prof. Ajmer Singh Kajal, JNU Delhi
9. Dr. Vijendra Pratap Singh, Jalesar, UP
10. Dr. Brijbhushan Chaturvedi, Brijshodh Sansthan, Vridavan
11. Prof. Madhu Bhatt Telang, Lalit Kala Department, University of Rajasthan
12. Prof. Anil Jain, University of Rajasthan
13. Dr. Naval Kishor Dube, Lecturer, Hanumangarh
14. Prof. Ravindra Nath Mishr, Goa

15. Prof. Brijesh Pandey, Sikkim
16. Prof. Satyaketu, Delhi University
17. Sh. Vitthal Pareek
18. Sh. Bhupendra Bharatpuri
19. Sh. Shyam Sundar Akinchan
20. Dr. Sushila Sheel
21. Ms. Sudha Arora
22. Mr. Girish Joshi

3. Geotagged photograph of the event:

26.88635, 75.81223

Inaugural Ceremony of the National Seminar

26.88635, 75.81223

Group Photograph of Participants

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी,जयपुर

एवं

कानोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय,जयपुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन

एवं

राष्ट्रीय संगोष्ठी

20-21 दिसम्बर, 2017

'भक्तिकालीन ब्रजभाषा साहित्य में कला एवं संस्कृति : वर्तमान परिप्रेक्ष्य'

<u>आयोजन स्थल</u>

सभागार, कानोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय
गांधी सर्किल, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर – 302015
दूरभाष सं. : 0141-2707539, 2706672 फैक्स : 2701769
Web : kanoriacollege.in E-mail : admin@kanoriacollege.in

अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्याकार सम्मेलन
एवं
राष्ट्रीय संगोष्ठी

आयोजन समिति

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी
निदेशक
कानोड़िया महिला महाविद्यालय,
जयपुर

निहाल चन्द गोयल, IAS
अध्यक्ष
राज. ब्रजभाषा अकादमी
जयपुर

डॉ. मिनी टी.सी
प्राचार्या
कानोड़िया महिला महाविद्यालय,
जयपुर

सोविला माथुर, RAS
सचिव
राज. ब्रजभाषा अकादमी
जयपुर

डॉ. रेखा गुप्ता
आयोजन प्रमुख

डॉ. दीप्तिमा शुक्ला
आयोजन प्रभारी

डॉ. शीताभ शर्मा
आयोजन सचिव
drsheetabjaiman@gmail.com

सह-सचिव

डॉ. धर्मा यादव

डॉ. सुनीता शेखावत

आयोजन समिति सदस्य

डॉ. नीलम वागेश्वरी
डॉ.ज्योत्सना जैन
डॉ. रितु जैन
डॉ. नीतू महावर
डॉ. प्रेरणा सिंह लवानिया
डॉ. स्वीटी माथुर
डॉ. पालू जोशी
श्रीमती प्रीति अग्रवाल
डॉ. प्रीति शर्मा
डॉ. विष्णुप्रिया टेमाणी
डॉ. मीनाक्षी शर्मा
श्री पवन कुमार शर्मा

सम्पर्क : 07976206919, 09414279556, 09785373262
09414454761, 09829722799, 09829371760

पंजीकरण समिति : बाँए से डॉ. नीतू महावर, डॉ. प्रेरणा सिंह लवानिया, डॉ. रितु जैन एवं डॉ. विनिता जैमन

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी, डॉ. शीताभ शर्मा एवं श्री सूरजभान जैमन

डॉ. राघव प्रकाश का तिलक से स्वागत करती छात्राएँ व डॉ. शीताभ शर्मा

डॉ. अनीता नायर एवं श्रीमती रंजु मेहता

डॉ. सविता पाईवाल (निदेशक, परिष्कार कॉलेज) को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए डॉ. शीताभ शर्मा

अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी
भक्तिकालीन ब्रजभाषा साहित्य में कला एवं संस्कृति : वर्तमान परिप्रेक्ष्य
20–21 दिसम्बर 2017

प्रतिवेदन

कानोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय एवं **राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी**, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में **20–21 दिसम्बर, 2017** को **'भक्तिकालीन ब्रजभाषा साहित्य में कला एवं संस्कृति : वर्तमान परिप्रेक्ष्य'** विषय आद्धृत अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

दीप प्रज्जवलन करते हुए बाँए से श्रीमती रंजु मेहता, डॉ. मिनी टीसी, डॉ. शीताभ शर्मा, डॉ. रेखा गुप्ता

दो दिवसीय संगोष्ठी में कुल **पाँच चर्चा–सत्र** थे जिनमें 19 विषय विशेषज्ञ वक्ताओं ने सहभागिता प्रदान की। कुल 65 शोध आलेख प्राप्त हुए। प्रत्येक सत्र में 5 से 8 तक पत्र वाचन किए गए, जिनमें से **तीन** श्रेष्ठ पत्रवाचकों को **श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर** व **सराहनीय** पुरस्कार प्रदान किए गए। संगोष्ठी में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के विषय विशेषज्ञ विद्वान व शोधार्थी सम्मिलित हुए, जिनमें मुख्य रूप से **बनारस विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, कोटा विश्वविद्यालय, ब्रज विश्वविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, आई.आई. एस. विश्वविद्यालय, जयपुर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, किशनगढ़, छत्तीसगढ़, दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, सिक्किम, शिलांग, बनस्थली विद्यापीठ, मणिपाल विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू व कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, दिल्ली** के साहित्य प्रेमियों ने मुख्य रूप से सहभागिता प्रदान की।

उद्घाटन सत्र

श्री सूरजभान जैमन (वरिष्ठ आई.ए.एस.)

संगोष्ठी के उद्घाटन का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ आई.ए.एस. **श्री सूरजभान जैमन**, जाँच

आयुक्त सचिवालय, जयपुर, विशिष्ट अतिथि **डॉ. अनीता नायर**, निदेशक राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर तथा बीज वक्ता, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग से पधारी **प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा** थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय निदेशक **डॉ. रश्मि चतुर्वेदी** ने की।

डीन डॉ. सीमा अग्रवाल, प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

औपचारिक स्वागत के उपरान्त ब्रजभाषा अकादमी के पूर्व सचिव व वरिष्ठ साहित्यकार **श्री विट्ठल पारीक** ने ब्रजभूमि वन्दना 'जय ब्रज वसुधा महतारी' प्रस्तुत की। महाविद्यालय प्राचार्या **डॉ. मिनी टी.सी** ने अतिथियों का स्वागत किया और आयोजकों को शुभकामनाएँ दी।

डॉ. शीताभ शर्मा

आयोजन सचिव **डॉ. शीताभ शर्मा** ने विषय परिचय देते हुए ब्रजभाषा काव्य की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने ब्रजक्षेत्र, ब्रजभाषा माधुर्य व ब्रजवासियों की विशिष्टताओं को मधुर छनद गायन के माध्यम से प्रस्तुत किया जिनमें–

"ब्रज के परम स्नेही लोग।
गारी दैं, हँस मिलत गहवरे,
अंतर प्रेम संजोग।
नगरीदास सदा आनन्दी,
सपनेहु नहीं सोक।
ब्रज के परम सनेही लोग।"

तथा

"जसोदा हूँ लोरी गायबौ, पालनौ सिखायौ तैने,
गोपी ग्वाल बालन ठिलोलिबो सिखायौ है।
राधा हूँ मान मनुहार अभिसार अरु,
बाँसुरी कूँ मीठौ रस घोरिबौ सिखायौ है।
साहित्य कूँ रस–रीति–शब्द–अर्थ–अलंकार,
ललित कलान् द्वार खोलिबौ सिखायौ है।
धन्य ब्रज बाणीं तेरी अकथ कहानी तैंने,
बाणीं के बिधाता हूँ कूँ बोलिबौ सिखायौ है।"

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी का स्वागत करते हुए डॉ. शीताभ शर्मा

प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा ने कहा कि ब्रज भाषा के माध्यम से हृदय के विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति होती है उन्होंने पारिवारिक मूल्यों, लोकतंत्र, स्त्री विमर्श, संगीत, चित्रकला एवं विज्ञान इत्यादि विविध विषयों को समेटते हुए प्रभावशाली वक्तव्य दिया।

प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा

उन्होंने ब्रजभाषा व भक्तिकालीन काव्य में निहित आधुनिक संदर्भों को विस्तार पूर्वक तार्किक रूप से व्यक्त किया।

विशिष्ट अतिथि **डॉ. अनीता नायर** ने अपने वक्तव्य में कहा कि भूमण्डलीकरण के दौर में हमें ब्रजभाषा साहित्य एवं संस्कृति को विरासत के रूप में अपनी युवा पीढ़ी को सौंपना चाहिए। मुख्यअतिथि श्री **सूरजभान जैमन** ने ब्रजभाषा में बोलते हुए कृष्ण भक्ति में निहित सखा भाव पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में महाविद्यालय निदेशक **डॉ. रश्मि चतुर्वेदी** ने कहा कि भक्ति में ही इतना सामर्थ्य है कि वह सारी सामाजिक वर्जनाओं को तोड़कर इष्ट से एकाकार करा दे। कृष्ण के चरवाहे से लोकनायक बनने की यात्रा को उन्होंने मनुष्य की क्षमता का चरम बताया।

हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं आयोजन प्रमुख **डॉ. रेखा गुप्ता** ने ब्रजभाषा, ब्रज मण डल एवं कृष्ण भक्ति के अनुपम सौन्दर्य पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित विद्यार्थियों, शोधार्थियों व अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। उद्‌घाटन सत्र का संचालन लोक प्रशासन विभाग की अध्यक्ष **डॉ. मनीषा माथुर** ने किया।

अल्पाहार के उपरान्त **प्रथम चर्चा–सत्र** में **'भक्तिकालीन ब्रजभाषा काव्य और कला उन्नयन (संगीत एवं चित्रकला)'** के विशेष सन्दर्भ में चर्चा हुई। इस सत्र की अध्यक्षता **डॉ. प्रभा भारद्वाज**, एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने की। विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला**, सहायक आचार्य, चित्रकला विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई से तथा स्टेनी मेमोरियल कॉलेज, जयपुर के संगीत विभाग की अध्यक्ष **डॉ. शचि भट्ट** थी।

इस सत्र में कुल आठ पत्र वाचन हुए। मणिपाल विश्वविद्यालय की शोधार्थी **आशा प्रजापत** ने 'भ्रमरगीत परम्परा', इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ की शोधार्थी **स्मृति कन्नौजी** ने 'रसखान के काव्य' तथा इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय से ही आशा राम साहु ने

डॉ. अनीता नायर

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी

डॉ. रेखा गुप्ता धन्यवाद ज्ञापित करते हुए

दाँए से डॉ. मनीषा माथुर मंच संचालन करते हुए
एवं डॉ. सुरभि शर्मा रिपोर्ट लिखते हुए

'सूर काव्य के परिप्रेक्ष्य में वात्सल्य रस' विषय पर पत्र वाचन किया। राजकीय महाविद्यालय अजमेर से हिन्दी प्रवक्ता **डॉ. अन्जु** ने 'सामाजिक रस की मंदाकिनी' तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से शोधार्थी **अमृतेश कुमार** ने 'कृष्ण भक्त कवयित्रियों' सम्बन्धित पत्र प्रस्तुत किया। जयपुर की साहित्यकार **श्रीमती कुसुम शर्मा** ने मीरा का प्रमुख भजन 'म्हानैं चाकर राखौ जी' प्रस्तुत किया।

डॉ. शचि भट्ट ने अष्टछाप कवियों का परिचय देते हुए विभिन्न राग रागनियों की जानकारी दी और राग रागेश्वरी आधारित एक पद का गायन किया। चित्रकला विषय की विशेषज्ञ **डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला** ने भक्ति साधना की हृदय स्थली किशनगढ़ शैली विषय पर आधारित पॉवर पॉइन्ट प्रस्तुति दी। उन्होंने कलात्मक चित्र दिखाते हुए रंगों के विविध संयोजन का उल्लेख किया और राधा कृष्ण के प्रेम व प्रकृति सौन्दर्य को रेखांकित किया।

सत्र अध्यक्ष **डॉ. प्रभा भारद्वाज** ने अष्ट छाप कवियों की संगीत कला को समझाते हुए हिन्दी के कृष्ण भक्ति काव्य की आत्मा इस संगीत को बताया। इस काव्य ने न सिर्फ भारत, अपितु पूरे विश्व को विविध राग–रागनियाँ दी हैं। यह काव्य कालजयी है। अंत में श्रेष्ठतर, श्रेष्ठ व सराहनीय पत्रवाचकों को पुरस्कृत किया गया – इसमें **डॉ. अन्जु** को श्रेष्ठतर, **अमृतेश कुमार मिश्र** को श्रेष्ठ एवं **आशा प्रजापत** को सराहनीय पुरस्कार व प्रमाण–पत्र दिया गया। आयोजन प्रभारी महाविद्यालय अकादमिक डीन **डॉ. दीप्तिमा शुक्ला** ने सभी को धन्यवाद दिया। सत्र संयोजन सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग **डॉ. धर्मा यादव** ने किया।

भोजनावकाश के उपरान्त **'भक्तिकालीन ब्रजभाषा काव्य : विविध सरोकार'** विषय पर आधारित **द्वितीय चर्चा–सत्र** का शुभारम्भ हुआ।

द्वितीय सत्र में अध्यक्ष थे **डॉ. कृष्णचन्द्र गोस्वामी,** हिन्दी विभागाध्यक्ष, महारानी श्री जया महाविद्यालय, भरतपुर, विषय विशेषज्ञ के रूप में परिष्कार कॉलेज के संस्थापक एवं अध्यक्ष **डॉ.**

दाँए से डॉ. शचि भट्ट, डॉ. प्रभा भारद्वाज एवं डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला

डॉ. अन्नपूर्णा को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए डॉ. शीताभ शर्मा

डॉ. शचि भट्ट को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए डीन डॉ. दीप्तिमा शुक्ला

मंच संचालन करते हुए डॉ धर्मा यादव व रिपोर्टिंग करते हुए श्रीमती विजयलक्ष्मी गुप्ता व डॉ. मीनाक्षी शर्मा

राघव प्रकाश एवं अलीगढ़ विश्वविद्यालय से हिन्दी की सह–आचार्या **डॉ. जया प्रियदर्शिनी शुक्ला** वक्ता थीं।

द्वितीय सत्र में तीन पत्र पढ़े गए। महाविद्यालय से बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा **कोमल टाँक** ने 'ब्रजभाषा काव्य और सूर की भक्ति भावना' विषय पर पत्र पढ़ा। बी.ए. द्वितीय वर्ष की ही छात्रा **दिलराज कँवर** ने 'हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग – भक्तिकाल' विषय पर आधारित पत्र वाचन किया तथा बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा **शक्ति** ने 'भ्रमरगीत की मूल संवेदना' पर पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. राघव प्रकाश ने अपने वक्तव्य में ईश्वर व भक्ति को अप्रत्यक्ष रूप से आधुनिक युग में अप्रासंगिक बताया। उन्होंने कहा कि हमें वेद–उपनिषदों की ईश्वरीय कल्पना से निकलकर मानव जीवन पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

भक्ति व ईश्वर की डूब को उन्होंने भक्तिकाल की सीमा बताया। उन्होंने कहा कि जहाँ प्रेम है, क्रीडा है, चहक है, वहीं सत्यता है, जीवन को सुखमय बनाना ही उपासना है।

वक्ता **डॉ. जया प्रियदर्शिनी शुक्ला** ने बड़े ही तार्किक रूप से भक्ति व ईश्वर की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि सगुण भक्ति में प्रेम के माध्यम से सामाजिक जीवन जीना सिखाया जा रहा है। उन्होंने कृष्ण के स्वरूप, लीलाएँ, गोपी प्रसंग, प्रेम, भक्ति इत्यादि विषयों को समेटते हुए ब्रजभाषा काव्य के विविध सरोकारों से परिचय करवाया।

अध्यक्ष **डॉ. कृष्णचन्द गोस्वामी** ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में विषय एवं विषय से अतिरिक्त शिक्षा जगत के विविध पक्षों पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने प्रमुख वक्ता **डॉ. राघव प्रकाश** के उपनिषदीय ईश्वर व भक्ति की अप्रासंगिकता सम्बन्धी विचारों का मय तथ्य व तर्क खण्ड़न करते हुए ईश्वर–भक्ति की प्रासंगिकता को सिद्ध किया। प्रभावशाली वक्तव्य में उन्होंने कहा कि जब तक मनुष्यता है तब तक भक्ति रहेगी। गोस्वामी जी ने

अतिथिगण अल्पाहार पर वार्ता करते हुए

डॉ. राघव प्रकाश (अध्यक्ष, परिष्कार कॉलेज) को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए डॉ. शीताभ शर्मा

डॉ. जया प्रियदर्शिनी शुक्ला

डॉ. कृष्ण चन्द्र गोस्वामी अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए

पूरे भारतवर्ष के कृष्ण भक्त संतों और ब्रजभाषा की शक्ति पर ओजस्वी वक्तव्य दिया, उन्होंने अनेक तथ्य व प्रमाण भी प्रस्तुत किए। बनारस से पधारे श्रोता पार्थ सारथी ने सुमधुर गीत सुनाया। अन्त में पत्रवाचक **दिलराज कँवर, कोमल टाँक** व **शक्ति** को सराहनीय पत्रों के लिए पुरस्कृत व प्रमाण–पत्र दिये गये। धन्यवाद **डॉ. शीताभ शर्मा** ने दिया एवं सत्र संचालन वाणिज्य विभाग की सहायक आचार्या, **डॉ. विष्णुप्रिया टेमाणी** ने किया।

डॉ. विष्णु प्रिया टेमाणी मंच संभालते हुए
व डॉ. ज़ाहिदा शबनम रिपोर्ट लिखते हुए

21 दिसम्बर को **तृतीय चर्चा–सत्र** में '**भक्तिकालीन ब्रजभाषा काव्य और लोक संस्कृति**' विषय पर चर्चा हुई। रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश) में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष **डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल** ने सत्र की अध्यक्षता की। **डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक'**, प्रभारी, वृन्दावन शोध संस्थान (उ. प्र.) प्रथम वक्ता तथा सुधी श्रोताओं की पुनः–पुनः की जा रही मांग पर द्वितीय वक्ता के रूप में **प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा** (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) ने मंच साझा किया।

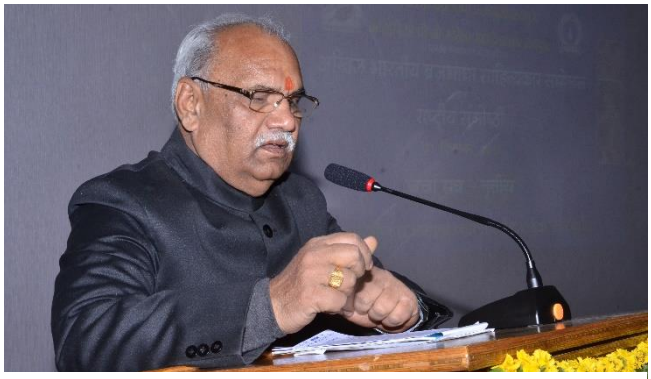

डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए

कानोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय की बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा **ज्योति मीणा** ने 'भ्रमरगीत परम्परा' विषय पर पत्र पढ़ा जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जयपुर से **शेफालिका पालावत** ने 'अवतार चरित्र पर हरिरस का प्रभाव' विषय पर पत्र वाचन किया। बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा **दीपा कुमारी** ने 'अष्टछाप के कवियों' का परिचय देते हुए पत्र प्रस्तुत किया। तृतीय वर्ष की ही छात्रा **संजू बैरवा** ने भी पत्र वाचन किया। संगीत व नृत्य विभाग कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय की **दृष्टिहीन** शोधार्थी **नेहा शर्मा** ने पत्रवाचन के साथ ही सुमधुर भजन प्रस्तुति दी।

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय की शोधार्थी नेहा शर्मा पत्रवाचन करते हुए

सत्र में **डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी** जी ने कहा कि वे ब्रज संस्कृति का विश्वकोश बनाने हेतु प्रयासरत हैं, विषय पर विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि लोक से पृथक कुछ नहीं है आदि से आधुनिक सब लोक से संबद्ध है।

प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा ने लोक संस्कृति के शाब्दिक भ्रम को दूर करते हुए कहा कि लोक से आशय

डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी वक्तव्य देते हुए

अनपढ़ ग्रामीण जन से कदापि नहीं है, अपितु ऐसा व्यक्ति जो शिक्षित होकर भी श्रम करता है, प्रकृति के बीच है, वह लोक है। आधुनिकता हमें प्रकृति से दूर कर रही है। नई पीढ़ी को लोक संस्कृति से अवगत कराना होगा। अध्यक्ष डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल ने अपने उद्‌बोधन में लोक संस्कृति शब्द की उत्पत्ति बताते हुए व्याख्या की और कहा कि लोक सबको साथ लेकर चलता है लोक संस्कृति मनुष्य की जय यात्रा का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अन्त में इस सत्र में पढ़े गये तीन सराहनीय पत्रवाचकों को पुरस्कृत किया गया। जिनमें शेफालिका पालावत को श्रेष्ठतर, दीपा कुमारी को श्रेष्ठ एवं ज्योति मीणा को सराहनीय पुस्कार व प्रमाण–पत्र दिये गये। सत्र संचालन अंग्रेजी विभाग की सहायक आचार्य **डॉ. प्रीति शर्मा** ने किया। आयोजन प्रभारी **डॉ. दीप्तिमा शुक्ला** ने वृन्दावन शोध संस्थान के प्रभारी **डॉ. ब्रज भूषण चतुर्वेदी** जी से शोध सम्बन्धित प्रक्रिया ज्ञात की तथा धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ. दीप्तिमा शुक्ला धन्यवाद ज्ञापित करते हुए

चतुर्थ चर्चा–सत्र का विषय था ''**भक्ति का वर्तमान परिप्रेक्ष्य**'' इसके अन्तर्गत 8 पत्र पढ़े गये जिसमें सीमन्तिनी पालावत, आफरीन खान, मनीता यादव, कुसुम शर्मा, शाईस्ता सैफी, कविता देवन्दा तथा कोमल कालरा ने पत्र पढ़े। परिष्कार कॉलेज, जयपुर के छात्र शैलेष शुक्ला ने पी.पी.टी. द्वारा भक्ति के ध्यान योग की प्रासंगिकता को प्रस्तुत किया।

पत्रवाचक दीपा कुमारी पुरस्कार ग्रहण करते हुए

सत्र के अन्तर्गत आयोजन सचिव, **डॉ. शीताभ शर्मा** ने प्रमुख वक्ता के रूप में ध्यान योग व भक्ति की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने सैद्धान्तिक भक्ति और व्यावहारिक भक्ति का अन्तर स्पष्ट करते हुए कहा कि ईश्वरीय सत्ता में मानव की न सिर्फ आस्था होनी चाहिए अपितु उसे अनुभूत करने की प्रक्रिया को भी सीखना चाहिए। अध्यात्म का आशय अपनी चेतना का विकास है यह कोई अंधा विश्वास नहीं है। इसके प्रमाण भी उपलब्ध हैं। उन्होंने वर्तमान में गोरखनाथ परम्परा में एकमात्र जीवित सिद्ध **डॉ. अवधूत शिवानन्द** द्वारा पूरे विश्व भर में भारतीय अध्यात्म के वैज्ञानिक पक्ष द्वारा मानव जीवन को सुखमय बनाने के प्रसंग बताए, भारतीय अध्यात्म **Science Beyond Science** है। डॉ. शर्मा ने कहा कि वर्तमान युग में दिग्भ्रमित व अवसाद ग्रस्त होती युवा पीढ़ी में मूल्यों की

मंचासीन डॉ. शीताभ शर्मा व प्रो. अनिल जैन

पुनर्स्थापना के लिए उसकी चेतना का ऊर्ध्व गमन उसका विकास अपरिहार्य है और यह कार्य सिर्फ और सिर्फ ध्यान–योग व भक्ति से ही सम्भव है। सत्र के अध्यक्ष **प्रो. अनिल जैन** ने पत्रवाचकों को आवश्यक दिशा–निर्देश देते हुए ब्रजभाषा के सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि, भाषाएँ सामाजिक विकास के साथ–साथ स्वयं को रूपान्तरित करती रहती हैं। भक्ति को वर्तमान से जोड़ते हुए उन्होंने कहा कि सभी सन्त कवियों की पंक्तियों का सापेक्ष अर्थ तलाशना होगा। सन्त कवियों से जुड़े विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से बताया कि पुरानी कविताओं में ढेरों ऐसे सन्दर्भ हैं जो हमारे जीवन को आसान बना सकते हैं और भक्तिकालीन सभी कवि हमारी आज की समस्याओं का उत्तर देते हैं। डॉ. जैन ने डॉ. शीताभ के तर्क (भक्ति से चेतना का विकास होता है) से सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि यदि भक्ति मनुष्य की चेतना का विकास करने का माध्यम है तब उसकी प्रासंगिकता समाज में स्वीकार्य हो सकती है अन्यथा नहीं। इस सत्र में सात पत्र–वाचन हुए जिनमें से **डॉ. सीमन्तिनी पालावत** सराहनीय, **शैलेश कुमार श्रेष्ठ** और **शाईस्ता सैफी** को श्रेष्ठतर पत्रों हेतु पुरस्कृत किया गया। हिन्दी विभागाध्यक्ष **डॉ. रेखा गुप्ता** ने धन्यवाद दिया। मंच संचालन **डॉ. सुरभि शर्मा** ने किया।

प्रो. अनिल जैन को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए डॉ. रेखा गुप्ता

दो दिवसीय इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में भक्तिकालीन ब्रजभाषा काव्य और कला उन्नयन (चित्रकला एवं संगीत), भक्तिकालीन ब्रजभाषा काव्य : विविध सरोकार, भक्तिकालीन ब्रजभाषा काव्य एवं लोक संस्कृति एवं भक्ति का वर्तमान परिप्रेक्ष्य विषयों पर विचार विमर्श एवं पत्र वाचन हुआ।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की शोधार्थी शाईस्ता सैफी पत्रवाचन करते हुए

संगोष्ठी का समापन '**भक्ति एवं समसामयिक विषय आद्धृत काव्यगोष्ठी**' के साथ सम्पन्न हुआ इस सत्र में भक्ति एवं समसामयिक विषय आद्धृत ब्रजभाषा काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार जयपुर के राज्यमंत्री का दर्जा प्राप्त माननीय **श्री एस.डी. शर्मा** द्वारा की गई।

परिष्कार कॉलेज का छात्र शैलेष शुक्ला पुरस्कार ग्रहण करते हुए

काव्य गोष्ठी में भारत के विभिन्न स्थानों से ब्रजभाषा के साहित्यकार व कवि उपस्थित थे। औपचारिक स्वागत के उपरान्त काव्य गोष्ठी का विधिवत आरम्भ हुआ। जिसमें कवि–कवयित्रियों ने ब्रजभाषा में छन्दों व गीतों का ऐसा मधुर गायन किया कि सम्पूर्ण वातावरण की राधा–कृष्ण मय हो गया।

डॉ. सुरभि शर्मा मंच संभालते हुए, डॉ. ज़ाहिदा शबनम व डॉ. सुमन धनाका रिपोर्ट लिखते हुए

राधा–कृष्ण की भक्ति परक रचनाओं के गायन ने भक्ति की निर्झरणी प्रत्येक हृदय में प्रवाहित कर दी। तो दूसरी ओर देशभक्ति, वैमनस्य, जनसंख्या वृद्धि, राजनीति व भ्रष्टाचार जैसे विषयों पर वैचारिक उद्वेलन भी सहज रूप से श्रोताओं में घटित हो रहा था। ब्रजभाषा के लावण्य व माधुर्य में पगी इन रचनाओं ने सभी को एक धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया। कोई विशिष्ट नहीं मानो सभी साधारणीकृत हो मंत्र मुग्ध हुए काव्य निर्झरणी में डूब गए हो।

काव्य गोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए आगरा (उ.प्र.) से आई **कवयित्री रचना गोस्वामी** ने शारदे वन्दना प्रस्तुत की। वृंदावन से पधारे **कवि ब्रजभूषण चतुर्वेदी** ने मधुर छंदों का गायन किया। **कवि विट्ठल पारीक (कामां)** के–

"न जाने ई कैसी हवा चल रही है,
हिमगिरि के हियरा अगन बर रही है।"

मार्मिक गीत ने सभी के रोम हर्ष से भर दिए।

श्री वरूण चतुर्वेदी (भरतपुर) ने जनसंख्या वृद्धि पर हास्य–व्यंग्य गीत गाया।

"लल्ली होए चाहे लल्ला।
करियौ मत पूरौ मोहल्ला।।"

तथा नशे की लत पर भी मुक्तक सुनाए।

"घर को निक राखौ ध्यान,
नशा करिबौ छोड़ौ।"

डॉ. सुशीला शील ने ब्रजभूमि की महत्ता को सिद्ध करते हुए मधुर गीत प्रस्तुत किया।

"तेरे कौन जनम के भाग, बन्यौ तू ब्रजवासी।
काशी प्रयाग कूँ त्याग बन्यौ तू ब्रजवासी।।"

कवि भूपेन्द्र भरतपुरी ने नारी सौन्दर्य व प्रेम की पराकाष्ठा मयी दो गीत गाए जिनमें –

"संदेसौ सपने में खास दै गयौ,
परदेशी मेरी जान लै गयौ।
नैंनन सौं बैंनन सौं मतवारे सैंनन सौं,
मीठी मुस्कान दै गयौ,
परदेसी मेरी जान लै गयौ।
सरर–सरर हवा चलै,
फरर–फरर चूनर करै,
झरर–झरर आँख मोरी बादर सी बरसैं।
आबे कौ हमकूँ आभास दै गयौ।
परदेसी मेरी जान लै गयौ।।"

तथा

श्री एस.डी. शर्मा (दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री) का स्वागत करते हुए डॉ. रश्मि चतुर्वेदी

कवयित्री रचना गोस्वामी काव्य–पाठ करते हुए

श्री विट्ठल पारीक का स्वागत करते हुए डॉ. धर्मा यादव

कवि भूपेन्द्र भरतपुरी काव्य गोष्ठी का संचालन करते हुए

"मेरी प्रीत राधिका है, मनमीत राधिका है,
मुरली के इन स्वरन में, संगीत राधिका है।"

दृष्टि विहीन कवि **रामखिलाड़ी 'स्वदेशी' (मथुरा)** ने 'शीर्ष पर सोहत मोर....' गीत एवं जयपुर, होली, पूर्णिमा आदि विषयों पर छंद सुनाए।

श्री श्याम सुन्दर अकिंचन (छाता, मथुरा) ने पूरे ब्रजमण्डल में किस प्रकार राधा रानी की कीर्ति गूँज रही है तथा वहाँ पुरूष कृष्ण की पूछ भी राधा से ही है आशय के भक्ति व प्रेम पूरित सुमधुर छन्दों के गायन से पूरे सभागार को भाव विभोर कर दिया। अकिंचन जी ने 'लाडली शतक' की रचना की जिसके कई मनमोहक छन्द उन्होंने सुमधुर कण्ठ से सुनाए कि श्रोता ब्रज की सौंधी गंध से सुवासित हो उठे। श्याम को याद करते हुए उन्होंने सुनाया–

"संग हमारे करी श्याम ने घात है,
भूला वादा गयो ये बुरी बात है"

तथा

"श्री राधे–राधे बोल, राधे नाम अनमोल,
मत डाँय–डाँय डोल, राधे उचित मुकाम है।
श्री राधे कूँ ना भूल, राधे जीवन कौ मूल,
कष्ट नष्ट हों समूल, राधे पीड़ाहारी बाम है।
चक्कर में श्याम के बनेंगौ घनचक्कर तू,
ब्रज के तौ गाम–गाम श्यामा बदनाम है।
राधे ही है यारों धाम राधे रट आठों धाम,
राधे लै मनाय श्याम राधे कौ गुलाम है।"

डॉ. रेखा गुप्ता ने समसामयिक विषयों पर दोहा गायन किया। 'ज्ञान बिना जीवन में होते ना विकास प्यारे'। शिक्षण पद्धति में API Score के कारण उपजे आपसी वैमनस्य के भाव को अपने छन्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

"विद्या के मंदिरन के हाल बेहाल भए,
पढ़बे–पढ़ाबे की न करै कोऊ बात है।
सबकूँ पछाड़ बढ़ जाऊँ, बस मैं ही आगे,
याही के जुगाड़ में बितात दिन–रात है।
तार–तार ह्वै गए संबंध आज आपस के,
प्रेम भाव कहूँ दूर–दूर न दिखात है।
ऐसी धूम मची एपीआई स्कोरन की,
दूसरे की छाती पर पाँव धरे जात हैं।"

काव्य गोष्ठी का हास्य–व्यंग्य पूर्ण संचालन कवि भूपेन्द्र भरतपुरी ने अपनी विशेष शैली में किया। इस सत्र के अध्यक्षीय उद्‌बोधन में दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री **श्री एस.डी. शर्मा** जी ने ब्रजभाषा में अपना वक्तव्य दिया तथा ब्रजभाषा काव्यगोष्ठी की भूरि–भूरि प्रशंसा की। **कवि श्याम सुन्दर अकिंचन** ने स्वयं द्वारा

कवि रामखिलाड़ी 'स्वदेशी' काव्य–पाठ करते हुए

बाँए से : डॉ. मिनी टीसी, डॉ. रश्मि चतुर्वेदी, डॉ. एस.डी. शर्मा, डॉ. शीताभ शर्मा एवं डॉ. नीलम बागेश्वरी

डॉ. रेखा गुप्ता दोहा–पाठ करते हुए

श्री एस. डी. शर्मा काव्य–गोष्ठी समापन पर ब्रजभाषा में अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए

रचित पुस्तक '**लाडली–शतक**', डॉ शीताभ को भेंट की। महाविद्यालय निदेशक **डॉ. रश्मि चतुर्वेदी** ने सभी को धन्यवाद दिया। इस दो दिवसीय संगोष्ठी का प्रतिवेदन सह सचिव **डॉ. धर्मा यादव** ने प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के समानान्तर ही महिला रचनाकार शिविर में भी छात्राओं व अन्य महिला रचनाकारों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी निभाई। जिनमें प्रमुख रूप से डॉ. सुशीला शील, डॉ. कुसुम शर्मा, डॉ. रेखा गुप्ता, डॉ. शीताभ शर्मा, श्रीमती रचना गोस्वामी, कोमल टाँक, अंजली कौर, कल्पना फरंड़, नेहा गौतम, शाइस्ता सैफी, डॉ. अंजू इत्यादि ने भाग लिया।

संगोष्ठी में दोनों ही दिन शहर के गणमान्य अतिथि व साहित्यकारों में प्रमुख रूप से वरिष्ठ गीतकार **बनज कुमार 'बनज'**, **कवि विनय शर्मा**, लेखिका संस्थान की अध्यक्ष **डॉ. वीना चौहान**, स्पन्दन संस्थान की अध्यक्ष **श्रीमती नीलिमा टिक्कू**, कवयित्री **कुसुम शर्मा**, प्राच्य विद्या संग्रहालय की सचिव व वरिष्ठ साहित्यकार **डॉ. सुषमा शर्मा** उपस्थित रहे।

जीवनपर्यन्त ब्रजभाषा के अनन्य सेवक, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के पूर्व अध्यक्ष व साहित्यकार **डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक** जी को याद करते हुए उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शारदा पाठक जी का स्वागत किया गया एवं उनकी पुत्रवधु **डॉ. शचि भट्ट** एवं पुत्र **डॉ. मनु शरद पाठक** की दोनों सक्रिय सहभागिता रही।

दो दिन तक चली इस संगोष्ठी में पत्रवाचकों व विषय विशेषज्ञों द्वारा की गई चर्चाओं का परिणाम बड़ा लाभकारी सिद्ध हुआ। वर्तमान समय में दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी व समाज में भक्तिकालीन मानवीय व नैतिक मूल्य आज भी प्रासंगिक व महत्वपूर्ण है। संत व साधुओं की कृष्ण भक्ति–राम भक्ति मात्र एक विश्वास या आस्था ही नहीं अपितु मूल्यों की प्रतिष्ठात्री है। हमारी यह विरासत हमें और आगामी पीढ़ियों को सापेक्ष ऊर्जा देती रहेगी। ईश्वर ऊर्जा का पुंज है। भक्ति व ध्यान से मानव की चेतना का विकास होता है। धर्म व अध्यात्म का अर्थ एकदम भिन्न है। धर्म युगानुरूप बदलता है परन्तु अध्यात्म अर्थात आत्मा (चेतना) का ऊर्ध्व गमन है। भक्तिकाल ने सभी जातियों व धर्म सम्प्रदायों के लिए समान रूप से द्वार खोले, यह इस काव्य की आधुनिकता है, वैज्ञानिकता है। आज हम आधुनिक कहलाने तो लगे हैं परन्तु वैचारिक रूप से अभी भी जड़ता में अटके हैं। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि ईश्वर भक्ति व ब्रजभाषा ने वर्ग, जाति व सम्प्रदाय भेद की सीमाओं का अतिक्रमण कर समाज में समरसता की स्थापना की। कितने ही मुस्लिम शायर कृष्ण भक्ति में लीन हो गए। अतः ब्रजभाषा व इसका साहित्य दोनों ही आज भी अपने मूल्यों के साथ समाज का पथ प्रदर्शन करने में सक्षम है।

डॉ. शीताभ शर्मा को पुस्तक भेंट करते हुए कवि श्याम सुन्दर अकिंचन

निदेशक डॉ. रश्मि चतुर्वेदी काव्य–गोष्ठी के समापन पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए

सुधी श्रोतागण

कवि भूपेन्द्र भरतपुरी का स्वागत करते हुए डॉ. मीनाक्षी शर्मा

संगोष्ठी की मधुर स्मृतियाँ

दाएँ से डॉ. रेखा गुप्ता एवं डॉ. शीताभ शर्मा

द्वितीय चर्चा सत्र
पुरस्कृत पत्रवाचक, विषय–विशेषज्ञ व शिक्षिकाएँ

सभागार में उपस्थित श्रोतागण

महाविद्यालय शिक्षिकाएँ

दाएँ से शिक्षिका प्रीति अग्रवाल, डॉ. मृणाली कंकर एवं डॉ. सुरभि शर्मा

चतुर्थ चर्चा सत्र के विषय विशेषज्ञ, शिक्षिकाएँ एवं पुरस्कृत पत्रवाचक

डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल जिज्ञासा शांत करते हुए

संकलनकर्ता

डॉ. शीताभ शर्मा, डॉ. सुनीता शेखावत, डॉ. धर्मा यादव, डॉ. प्रेरणा सिंह लवानिया

समाचार–पत्रों में प्रकाशन

DainikBhaskar.com
21, Dec | Jaipur City Bhaskar

ब्रजभाषा साहित्य की लोकप्रियता पर एक्सपर्ट्स ने की चर्चा

जयपुर | ब्रजभाषा साहित्य में समाहित विविध ललित कलाओं की जानकारी देते हुए एक्सपर्ट ने ब्रजभाषा की लोकप्रियता पर चर्चा की। अवसर था कानोड़िया पीजी गर्ल्स कॉलेज व ब्रजभाषा साहित्य अकादमी, जयपुर की ओर से बुधवार को अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन व नेशनल सेमिनार की शुरुआत का। दो दिवसीय इस सेमिनार के पहले दिन बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा ने अपने बीज वक्तव्य में ब्रजभाषा की लोकप्रियता पर प्रकाश डाला। पहले सेशन में डॉ. प्रभा भारद्वाज अध्यक्ष रहीं व डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला ने भक्ति कालीन चित्रकला की जानकारी दी। सैकंड सेशन में ब्रज यूनिवर्सिटी से डॉ. कृष्णचन्द्र गोस्वामी ने अध्यक्ष और डॉ. जया प्रियदर्शिनी शुक्ल ने वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया। सत्रों में देश के विभिन्न प्रांतों से आए रिसर्च स्कॉलर्स ने पेपर प्रजेंट किए।

जयपुर, गुरुवार
21 दिसंबर 2017 | 12 | डेली न्यूज़

ब्रजभाषा की लोकप्रियता व साहित्य पर हुई चर्चा

डेली न्यूज, mix रिपोर्टर

जयपुर। कानोड़िया पीजी गर्ल्स कॉलेज एवं ब्रजभाषा साहित्य अकादमी, जयपुर के सहयोग से बुधवार को दो दिवसीय अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी सचिव डॉ. शीताभ शर्मा ने सम्मेलन के विषय का परिचय देते हुए शुरुआत की। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. मिनी टी.सी, निदेशक डॉ. रश्मि चतुर्वेदी, मुख्य अतिथि आईएएस सूरजभान जैमन एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. अनीता नायर, निदेशक राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी उपस्थित रहे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा ने ब्रजभाषा की लोकप्रियता पर चर्चा करते हुए ब्रजभाषा साहित्य में समाहित विविध ललित कलाओं की जानकारी दी।

कानोड़िया कॉलेज में दो दिवसीय अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन आयोजित

संगोष्ठी के पहले सेशन में डॉ. प्रभा भारद्वाज अध्यक्ष रहीं एवं डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला ने भक्तिकालीन चित्रकला की जानकारी दी। दूसरे सत्र में ब्रज विश्वविद्यालय, भरतपुर से डॉ. कृष्णचंद्र गोस्वामी अध्यक्ष एवं डॉ. जया प्रियदर्शिनी शुक्ल ने व्याख्यान दिया। दोनों सत्रों में विभिन्न शोधार्थियों ने पत्रवाचन किया जिनमें से श्रेष्ठ पत्रों को पुरस्कृत किया गया। आयोजकों ने बताया कि गुरुवार को दो सत्रों के अन्तर्गत भक्तिकालीन ब्रजभाषा काव्य और भक्ति का वर्तमान परिपेक्ष्य विषय पर चर्चा होगी तथा आध्यात्मिक व समसामयिक सन्दर्भ आद्धत ब्रजभाषा काव्य गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा।

ब्रजभाषा की लोकप्रियता और ब्रजभाषा साहित्य पर डाला प्रकाश

ब्रजभाषा काव्य एवं भक्ति के वर्तमान परिपेक्ष्य पर चर्चा

पत्रिका PLUS रिपोर्टर 21.12.2017

जयपुर ● ब्रजभाषा साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार से दो दिवसीय अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू हुई। संगोष्ठी सचिव डॉ. शीताभ शर्मा ने सम्मेलन के विषय का परिचय दिया और महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. मिनी टी.सी ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. रश्मि चतुर्वेदी ने अपने उद्बोधन में ब्रजभाषा के माधुर्य की सराहना की। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि आई.ए.एस. सूरजभान जैमन और विशिष्ट अतिथि राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की निदेशक डॉ. अनीता नायर थी। इस दौरान बनारस हिन्दू प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा ने अपने वक्तव्य में ब्रजभाषा की लोकप्रियता पर प्रकाश डाला और ब्रजभाषा साहित्य में समाहित विविध ललित कलाओं की जानकारी दी। प्रथम सत्र में डॉ. प्रभा भारद्वाज अध्यक्ष रहीं और डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला ने भक्तिकालीन चित्रकला की जानकारी दी। द्वितीय सत्र में ब्रज विश्वविद्यालय भरतपुर से डॉ. कृष्णचन्द्र गोस्वामी अध्यक्ष और डॉ. जया प्रियदर्शिनी शुक्ल मुख्य वक्ता थी। दोनों सत्रों में देश के विभिन्न प्रान्तों से आए शोधार्थियों ने पत्रवाचन किया, जिनमें से श्रेष्ठ पत्रों को पुरस्कृत किया गया। अंत में हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. रेखा गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित किया। 21 दिसम्बर को दो सत्रों के अन्तर्गत 'भक्तिकालीन ब्रजभाषा काव्य और भक्ति का वर्तमान परिपेक्ष्य' विषय पर चर्चा होगी। इसके बाद आध्यात्मिक व समसामयिक सन्दर्भ ब्रजभाषा काव्य गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा।

दैनिक नवज्योति 21.12.2017

अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन शुरु

नव एक्सप्रेस

कानोड़िया पीजी महिला महाविद्यालय एवं ब्रजभाषा साहित्य अकादमी, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को दो दिवसीय अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी सचिव डॉ. शीताभ शर्मा ने सम्मेलन के विषय का परिचय दिया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. मिनी टी.सी ने अतिथियों का स्वागत किया। महाविद्यालय निदेशक डॉ. रश्मि चतुर्वेदी ने अध्यक्षीय उद्बोधन में ब्रजभाषा के माधुर्य की सराहना की। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि आई.ए.एस. सूरजभान जैमन एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. अनीता नायर, निदेशक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी रहे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा ने अपने बीज वक्तव्य में ब्रजभाषा की लोकप्रियता पर प्रकाश डाला।

...कार के लिए आवेदन किए हैं। ... में किसानों की समस्याओं और पीड़ा से अवगत करवाएगी।

ब्रजभाषा काव्य और लोक संस्कृति पर चर्चा

नव एक्सप्रेस दैनिक नवज्योति 22 दिसम्बर 2017

कानोड़िया पीजी महिला महाविद्यालय एवं ब्रजभाषा साहित्य अकादमी, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के अन्तर्गत गुरुवार को भक्तिकालीन ब्रजभाषा काव्य और लोक-संस्कृति तथा भक्ति का वर्तमान परिप्रेक्ष्य विषयों पर पत्रवाचन एवं चर्चा की गई। कार्यक्रम में डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल, डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी एवं प्रो. अनिल जैन ने सारगर्भित व्याख्यान दिया। श्रेष्ठ पत्रवाचकों को पुरस्कृत किया गया। संगोष्ठी सह-सचिव डॉ. धर्मा यादव ने सम्मेलन का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। आध्यात्मिक व समसामयिक संदर्भ आधारित ब्रजभाषा काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता देवस्थान विभाग के अध्यक्ष एस.डी. शर्मा ने की। इस मौके पर विठ्ठल पारीक, भूपेन्द्र भरतपुरी, डॉ. सुशीला, वरुण चतुर्वेदी, श्याम सुन्दर अकिंचन, गिरीश जोशी, रचना गोस्वामी, डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी, डॉ. रेखा गुप्ता एवं डॉ. शीताभ शर्मा ने ब्रजभाषा के सुमधुर गीतों की मनमोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में महाविद्यालय निदेशक डॉ. रश्मि चतुर्वेदी व प्राचार्या डॉ. मिनी टी.सी एवं महाविद्यालय की छात्राओं सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जयपुर, शुक्रवार 22 दिसम्बर 2017 12 डेली न्यूज़

22.12.2017

अखिल भारतीय ब्रजभाषा काव्य गोष्ठी

डेली न्यूज, mix रिपोर्टर, जयपुर। कानोड़िया पीजी महिला महाविद्यालय एवं ब्रजभाषा साहित्य अकादमी की सहभागिता में दो दिवसीय अखिल भारतीय ब्रजभाषा साहित्यकार सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के तहत गुरुवार को भक्तिकालीन ब्रजभाषा काव्य और लोक-संस्कृति और भक्ति का वर्तमान परिप्रेक्ष्य विषयों पर पत्रवाचन एवं चर्चा की गई। कार्यक्रम के अन्तर्गत डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल, डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक' एवं प्रो. अनिल जैन ने सारगर्भित व्याख्यान दिया। श्रेष्ठ पत्रवाचकों को पुरस्कृत किया गया। संगोष्ठी सह-सचिव डॉ. धर्मा यादव ने सम्मेलन का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

आध्यात्मिक व समसामयिक संदर्भ आधारित ब्रजभाषा काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता एस.डी. शर्मा, राज्यमंत्री राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास मंडल, देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार ने की। विठ्ठल पारीक, भूपेन्द्र भरतपुरी, डॉ. सुशीला 'शील', वरुण चतुर्वेदी, श्याम सुंदर अकिंचन, गिरीश जोशी, रचना गोस्वामी, डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी, डॉ. रेखा गुप्ता एवं डॉ. शीताभ शर्मा ने ब्रजभाषा के सुमधुर गीतों की मनमोहक प्रस्तुति दी। महाविद्यालय निदेशक डॉ. रश्मि चतुर्वेदी, प्राचार्या डॉ. मिनी टी.सी एवं महाविद्यालय की छात्राओं ने काव्य गोष्ठी का रसास्वादन किया।